काल

क्रिया के जिस रूप से कार्य संपन्न होने का समय (काल) ज्ञात हो वह काल कहलाता है। काल के निम्नलिखित तीन भेद हैं-

1. भूतकाल। 2. वर्तमानकाल।

3. भविष्यकाल।

1. भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय (अतीत) में कार्य संपन्न होने का बोध हो वह भूतकाल कहलाता है। जैसे-

(1) बच्चा गया।

(2) बच्चा गया है।

(3) बच्चा जा चुका था।

भूतकाल के निम्नलिखित छह भेद हैं-

1. सामान्य भूत।

2. आसन्न भूत।

3. अपूर्ण भूत।

4. पूर्ण भूत।

5. संदिग्ध भूत।

6. हेतुहेतुमद भूत।

1.सामान्य भूत- क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में कार्य के होने का बोध हो किन्तु ठीक समय का ज्ञान न हो, वहाँ सामान्य भूत होता है। जैसे-

(1) बच्चा गया।

(2) श्याम ने पत्र लिखा।

(3) कमल आया।

2.आसन्न भूत- क्रिया के जिस रूप से अभी-अभी निकट भूतकाल में क्रिया का होना प्रकट हो, वहाँ आसन्न भूत होता है। जैसे-

(1) बच्चा आया है।

(2) श्याम ने पत्र लिखा है।

(3) कमल गया है।

3.अपूर्ण भूत- क्रिया के जिस रूप से कार्य का होना बीते समय में प्रकट हो, पर पूरा होना प्रकट न हो वहाँ अपूर्ण भूत होता है। जैसे-

(1) बच्चा आ रहा था।

(2) श्याम पत्र लिख रहा था।

(3) कमल जा रहा था।

4.पूर्ण भूत- क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका है उसे पूर्ण भूत कहते हैं। जैसे-

(1) श्याम ने पत्र लिखा था।

(2) बच्चा आया था।

(3) कमल गया था।

Cambridge Institute 9212588588

5.संदिग्ध भूत- क्रिया के जिस रूप से भूतकाल का बोध तो हो किन्तु कार्य के होने में संदेह हो वहाँ संदिग्ध भूत होता है। जैसे-

(1) बच्चा आया होगा।

(2) श्याम ने पत्र लिखा होगा।

(3) कमल गया होगा।

6.हेतुहेतुमद भूत- क्रिया के जिस रूप से बीते समय में एक क्रिया के होने पर दूसरी क्रिया का होना आश्रित हो अथवा एक क्रिया के न होने पर दूसरी क्रिया का न होना आश्रित हो वहाँ हेतुहेतुमद भूत होता है। जैसे-

(1) यदि श्याम ने पत्र लिखा होता तो मैं अवश्य आता।

(2) यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।

2. वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से कार्य का वर्तमान काल में होना पाया जाए उसे वर्तमान काल कहते हैं। जैसे-

(1) मुनि माला फेरता है।

(2) श्याम पत्र लिखता होगा।

इसके निम्नलिखित तीन भेद हैं-

(1) सामान्य वर्तमान।

(2) अपूर्ण वर्तमान।

(3) संदिग्ध वर्तमान।

1.सामान्य वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य वर्तमान काल में सामान्य रूप से होता है वहाँ सामान्य वर्तमान होता है। जैसे-

(1) बच्चा रोता है।

(2) श्याम पत्र लिखता है।

(3) कमल आता है।

2.अपूर्ण वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य अभी चल ही रहा है, समाप्त नहीं हुआ है वहाँ अपूर्ण वर्तमान होता है। जैसे-

(1) बच्चा रो रहा है।

(2) श्याम पत्र लिख रहा है।

(3) कमल आ रहा है।

3.संदिग्ध वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से वर्तमान में कार्य के होने में संदेह का बोध हो वहाँ संदिग्ध वर्तमान होता है। जैसे-

(1) अब बच्चा रोता होगा।

(2) श्याम इस समय पत्र लिखता होगा।

3. भविष्यत काल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य भविष्य में होगा वह भविष्यत काल कहलाता है। जैसे- (1) श्याम पत्र लिखेगा। (2) शायद आज संध्या को वह आए।

इसके निम्नलिखित दो भेद हैं-

1. सामान्य भविष्यत।

Cambridge Institute 9212588588

2. संभाव्य भविष्यत।

1.सामान्य भविष्यत- क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने का बोध हो उसे सामान्य भविष्यत कहते हैं। जैसे-

(1) श्याम पत्र लिखेगा।

(2) हम घूमने जाएँगे।

2.संभाव्य भविष्यत- क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने की संभावना का बोध हो वहाँ संभाव्य भविष्यत होता है जैसे-

(1) शायद आज वह आए।

(2) संभव है श्याम पत्र लिखे।

(3) कदाचित संध्या तक पानी पड़े।

Cambridge Institute 9212588588

उपसर्ग

वे शब्दांश जो किसी शब्द के आरंभ में लगकर उनके अर्थ में विशेषता ला देते हैं अथवा उसके अर्थ को बदल देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। जैसे-परा-पराक्रम, पराजय, पराभव, पराधीन, पराभूत।

उपसर्गों को चार भागों में बाँटा जा सकता हैं-

(क) संस्कृत के उपसर्ग

(ख) हिन्दी के उपसर्ग

(ग) उर्दू के उपसर्ग

(घ) उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय

(क) संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ (में)	शब्द-रूप
अति	अधिक, ऊपर	अत्यंत, अत्युत्तम, अतिरिक्त
अधि	ऊपर, प्रधानता	अधिकार, अध्यक्ष, अधिपति
अनु	पीछे, समान	अनुरूप, अनुज, अनुकरण
अप	बुरा, हीन	अपमान, अपयश, अपकार
अभि	सामने, अधिक पास	अभियोग, अभिमान, अभिभावक
अव	बुरा, नीचे	अवनति, अवगुण, अवशेष
आ	तक से, लेकर, उलटा	आजन्म, आगमन, आकाश
उत्	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्कंठा, उत्कर्ष, उत्पन्न
उप	निकट, गौण	उपकार, उपदेश, उपचार, उपाध्यक्ष
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्जन, दुर्दशा, दुर्गम
दुस्	बुरा	दुश्चरित्र, दुस्साहस, दुर्गम
नि	अभाव, विशेष	नियुक्त, निबंध, निमग्न
निर्	बिना	निर्वाह, निर्मल, निर्जन
निस्	बिना	निश्चल, निश्छल, निश्चित
परा	पीछे, उलटा	परामर्श, पराधीन, पराक्रम
परि	सब ओर	परिपूर्ण, परिजन, परिवर्तन
प्र	आगे, अधिक, उत्कृष्ट	प्रयत्न, प्रबल, प्रसिद्ध
प्रति	सामने, उलटा, हरएक	प्रतिकूल, प्रत्येक, प्रत्यक्ष

Cambridge Institute 9212588588

वि	हीनता, विशेष	वियोग, विशेष, विधवा
सम्	पूर्ण, अच्छा	संचय, संगति, संस्कार
सु	अच्छा, सरल	सुगम, सुयश, स्वागत

(ख) हिन्दी के उपसर्ग

ये प्रायः संस्कृत उपसर्गों के अपभ्रंश मात्र ही हैं।

उपसर्ग	अर्थ (में)	शब्द-रूप
अ	अभाव, निषेध	अजर, अछूत, अकाल
अन	रहित	अनपढ़, अनबन, अनजान
अध	आधा	अधमरा, अधखिला, अधपका
औ	रहित	औगुन, औतार, औघट
कु	बुराई	कुसंग, कुकर्म, कुमति
नि	अभाव	निडर, निहत्था, निकम्मा

(ग) उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ (में)	शब्द-रूप
कम	थोड़ा	कमबख्त, कमजोर, कमसिन
खुश	प्रसन्न, अच्छा	खुशबू, खुशदिल, खुशमिजाज
गैर	निषेध	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरकौम
दर	में	दरअसल, दरकार, दरमियान
ना	निषेध	नालायक, नापसंद, नामुमकिन
बा	अनुसार	बामौका, बाकायदा, बाइज्जत
बद	बुरा	बदनाम, बदमाश, बदचलन
बे	बिना	बेईमान, बेचारा, बेअक्ल
ला	रहित	लापरवाह, लाचार, लावारिस

Cambridge Institute 9212588588

सर	मुख्य	सरकार, सरदार, सरपंच
हम	साथ	हमदर्दी, हमराज, हमदम
हर	प्रति	हरदिन, हरएक,हरसाल

(घ) उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाले संस्कृत अव्यय

उपसर्ग	अर्थ (में)	शब्द-रूप
अ (व्यंजनों से पूर्व)	निषेध	अज्ञान, अभाव, अचेत
अन् (स्वरों से पूर्व)	निषेध	अनागत, अनर्थ, अनादि
स	सहित	सजल, सकल, सहर्ष
अधः	नीचे	अधःपतन, अधोगति, अधोमुख
चिर	बहुत देर	चिरायु, चिरकाल, चिरंतन
अंतर	भीतर	अंतरात्मा, अंतर्राष्ट्रीय, अंतर्जातीय
पुनः	फिर	पुनर्गमन, पुनर्जन्म, पुनर्मिलन
पुरा	पुराना	पुरातत्व, पुरातन
पुरस्	आगे	पुरस्कार, पुरस्कृत
तिरस्	बुरा, हीन	तिरस्कार, तिरोभाव
सत्	श्रेष्ठ	सत्कार, सज्जन, सत्कार्य

Cambridge Institute 9212588588

प्रत्यय

वे शब्दांश जो किसी शब्द के अन्त में लगकर उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, अर्थात् नये अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। जैसे -

समाज + इक = सामाजिक

सुगन्ध + इत = सुगन्धित

भूलना + अक्कड़ = भुलक्कड़

मीठा + आस = मिठास

अतः प्रत्यय लगने पर शब्द एवं शब्दांश में सन्धि नहीं होती बल्कि शब्द के अन्तिम वर्ण में मिलने वाले प्रत्यय के स्वर की मात्रा लग जायेगी, व्यंजन होने पर वह यथावत रहता है जैसे

लोहा + आर = लुहार

नाटक + कार = नाटककार

हिन्दी में प्रत्यय मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं-

(i)कृदन्त प्रत्यय (ii)तद्धित प्रत्यय

1. कृदन्त प्रत्यय:

वे प्रत्यय जो धातुओं अर्थात् क्रिया पद के मूल रूप के साथ लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं कृदन्त या कृत प्रत्यय कहलाते हैं। हिन्दी क्रियाओं में अन्तिम वर्ण 'ना' का लोपकर शेष शब्द के साथ प्रत्यय का योग किया जाता है। कृदन्त या कृत प्रत्यय 5 प्रकार के होते हैं-

(i) कृतवाचक:

वे प्रत्यय जो कृतवाचक शब्द बनाते हैं जैसे-

अक = लेखक, नायक, गायक, पाठक

अक्कड़ = भुलक्कड़, घुमक्कड़, पियक्कड़, कुदक्कड़

आक = तैराक, लड़ाक

आलू = झगड़ाल

आड़ी = खिलाड़ी

इयल = अड़ियल, मरियल

एरा = लुटेरा, बसेरा

ऐया = गवैया,

ओड़ा = भगोड़ा

ता = दाता,

वाला = पढ़नेवाला

हार = राखनहार, चाखनहार

(ii)कर्मवाचक = वे प्रत्यय जो कर्म के अर्थ को प्रकट करते हैं

औना = खिलौना (खेलना)

नी = सूँघनी (सूँघना)

(iii)करणवाचक = वे प्रत्यय जो क्रिया के कारण को बताते हैं

आ = झूला (झूलना)

ऊ = झाड़ू (झाड़ना)

Cambridge Institute 9212588588

न = बेलन (बेलना)

नी = कतरनी (कतरना)

(iii)भाववाचक = वे प्रत्यय जो क्रिया से भाववाचक संज्ञा का निर्माण करते हैं।

अ = मार, लूट, तोल, लेख

आ = पूजा

आई = लड़ाई, कटाई, चढ़ाई, सिलाई

आन = मिलान, चढान, उठान, उड़ान

आप = मिलाप, विलाप

आव = चढ़ाव, घुमाव, कटाव

आवा = बुलावा

आवट = सजावट, लिखावट, मिलावट

आहट = घबराहट, चिल्लाहट

ई = बोली

औता = समझौता

औती = कटौती, मनौती

ती = बढ़ती, उठती, चलती

त = बचत, खपत, बढ़त

न = फिसलन, ऐंठन

नी = मिलनी

(v) क्रिया बोधक = वे प्रत्यय जो क्रिया का ही बोध कराते हैं

हुआ = चलता हुआ, पढ़ता हुआ

2. तद्धित प्रत्यय:

वे प्रत्यय जो क्रिया पदों के अतिरिक्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों के साथ लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे

छात्र + आ = छात्रा

देव + ई = देवी

मीठा+आस = मिठास

अपना+पन = अपनापन

तद्धित प्रत्यय 6 प्रकार के होते हैं।

(i)कर्त्तुवाचक तद्धित प्रत्यय - वे प्रत्यय जो किसी संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्द के साथ जुड़कर कर्त्तुवाचक शब्द का निर्माण करते हैं।-

आर = लुहार, सुनार

इया = रसिया

ई = तेली

एरा = घसेरा

(ii)भाववाचक तद्धित प्रत्यय - वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के साथ जुड़कर भाववाचक संज्ञा बनाते हैं।

आई = बुराई

Cambridge Institute 9212588588

आपा = बुढ़ापा

आस = खटास, मिठास

आहट = कड़वाहट

इमा = लालिमा

ई = गर्मी

ता = सुन्दरता, मूर्खता, मनुष्यता,

त्व = मनुष्यत्व, पशुत्व

पन = बचपन, लड़कपन, छुटपन

(iii)सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय - इन प्रत्ययों के लगने से सम्बन्ध वाचक शब्दों की रचना होती है।

एरा = चचेरा, ममेरा

इक = शारीरिक

आलु = दयालु, श्रद्धालु

इत = फलित

ईला = रसीला, रंगीला

ईय = भारतीय

ऐला = विषैला

तर = कठिनतर

मान = बुद्धिमान

वत् = पुत्रवत, मातृवत्

हरा = इकहरा

जा = भतीजा, भानजा

ओई = ननदोई

(iii)अप्रत्यवाचक तद्धित प्रत्यय - संस्कृत के प्रभाव के कारण संज्ञा के साथ अप्रत्यवाचक प्रत्यय लगाने से सन्तान का बोध होता है।

अ = वासुदेव, राघव, मानव

ई = दाशरथि, वाल्मीकि, सौमित्रि

एय = कौन्तेय, गांगेय, भागिनेय

य = दैत्य, आदित्य

ई = जानकी, मैथिली, द्रोपदी, गांधारी

(v) ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय - संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के साथ प्रयुक्त होकर ये उनके लघुता सूचक शब्दों का निर्माण करते हैं।

इया = खटिया, लुटिया, डिबिया

ई = मण्डली, टोकरी, पहाड़ी, घण्टी

ओला = खटोला, संपोला

स्त्रीबोधक तद्धित प्रत्यय: वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के साथ लगकर उनके स्त्रीलिंग का बोध कराते है।

आ = सुता, छात्रा, अनुजा

आइन = ठकुराइन, मुंशियाइन

आनी = देवरानी, सेठानी, नौकरानी

इन = बाघिन, मालिन

Cambridge Institute 9212588588

नी = शेरनी, मोरनी

उर्दू के प्रत्यय

हिन्दी की उदारता के कारण उर्दू के कतिपय प्रत्यय हिन्दी में भी प्रयुक्त होने लगे हैं। जैसे

गर = जादूगर, बाजीगर, कारीगर, सौदागर

ची = अफीमची, तबलची, बाबरची, तोपची

नाक = शर्मनाक, दर्दनाक

दार = दुकानदार, मालदार, हिस्सेदार, थानेदार

आबाद = अहमदाबाद, इलाहाबाद, हैदराबाद

इन्दा = परिन्दा, बाशिन्दा, शर्मिन्दा, चुनिन्दा

इश = फरमाइश, पैदाइश, रंजिश

इस्तान = कब्रिस्तान, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान

खोर = हरामखोर, घूसखोर, जमाखोर, रिश्वतखोर

गाह = ईदगाह, बंदरगाह, दरगाह, आरामगाह

गार = मददगार, यादगार, रोजगार, गुनाहगार

गीर = राहगीर, जहाँगीर

गी = दीवानगी, ताजगी, सादगी

गीरी = कुलीगीरी, मुंशीगीरी

नवीस = नक्शानवीस, अर्जीनवीस

नामा = अकबरनामा, सुलहनामा, इकरारनामा

बन्द = हथियारबन्द, नजरबन्द, मोहरबन्द

बाज = नशेबाज, चालबाज, दगाबाज

मन्द = अकलमन्द, जरूरतमंद, ऐहसानमंद

साज = जिल्दसाज, घड़ीसाज, जालसाज

विशेष: कई बार प्रत्यय लगने पर मूलशब्द के आदि मध्य या अन्त में प्रयुक्त स्वरों में

परिवर्तन हो जाता है। जैसे

इक = समाज-सामाजिक, इतिहास-ऐतिहासिक,

नीति-नैतिक, पुराण-पौराणिक, भूगोल-

भौगोलिक, लोक-लौकिक

य = मधुर-माधुर्य, दिति-दैत्य, सुन्दर-सौन्दर्य,

इ = दशरथ-दाशरथि, सुमित्रा-सौमित्रि

एय = गंगा-गांगेय, कुन्ती-कौन्तेय

आइन = ठाकुर,-ठकुराइन, मुंशी-मुंशियाइन

इनी = हाथी-हथिनी

एरा = चाचा-चचेरा, लूटना-लुटेरा

आई = साफ-सफाई, मीठा-मिठाई, बोना-बुवाई

अक्कड़ = भूलना-भुलक्कड़, पीना-पियक्कड़

आरी = पूजना-पुजारी, भीख-भिखारी

ऊटा = काला-कलूटा

आव = खींचना-खिंचाव, घूमना-घुमाव

आस = मीठा-मिठास

Cambridge Institute 9212588588

94. शत्रु- रिपु, दुश्मन, अमित्र, वैरी, अरि, विपक्षी, अराति।

95. शिक्षक- गुरु, अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय।

96. साँप- अहि, भुजंग, ब्याल, सर्प, नाग, विषधर, उरग, पवनासन, पन्नग।

97. सूर्य- रवि, सूरज, दिनकर, प्रभाकर, आदित्य, दिनेश, भास्कर, दिवाकर।

98. संसार- जग, विश्व, जगत, लोक, दुनिया।

99. सोना- स्वर्ण, कंचन, कनक, हेम, कुंदन।

100. सिंह- केसरी, शेर, महावीर, हरि, मृगपति, वनराज, शार्दूल, नाहर, सारंग, मृगराज।

101. समुद्र- सागर, पयोधि, उदधि, पारावार, नदीश, जलधि, सिंधु, रत्नाकर, वारिधि।

102. समूह- दल, झुंड, वृंद, गण, पुंज।

103. स्त्री- नारी, महिला, अबला, ललना, औरत, कामिनी, रमणी।

104. सुगंधि- सौरभ, सुरभि, महक, खुशबू।

105. स्वर्ग- सुरलोक, देवलोक, परमधाम, त्रिदिव, दयुलोक।

106. हवा : पवन, वायु, समीर, अनिल, वात ,मरुत ,पवमान

107. हिमालय- हिमगिरी, हिमाचल, गिरिराज, पर्वतराज, नगेश।

108. हृदय- छाती, वक्ष, वक्षस्थल, हिय, उर।

109. हाथ- हस्त, कर, पाणि।

110. हाथी- नाग, हस्ती, राज, कुंजर, कूम्भा, मतंग, वारण, गज, द्विप, करी, मदकल।

Cambridge Institute 9212588588

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1	जिसे देखकर डर (भय) लगे	डरावना, भयानक
2	जो स्थिर रहे	स्थावर
3	ज्ञान देने वाली	ज्ञानदा
4	भूत-वर्तमान-भविष्य को देखने (जानने) वाले	त्रिकालदर्शी
5	जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
6	जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
7	पंद्रह दिन में एक बार होने वाला	पाक्षिक
8	अच्छे चरित्र वाला	सच्चरित्र
9	आज्ञा का पालन करने वाला	आज्ञाकारी
10	रोगी की चिकित्सा करने वाला	चिकित्सक
11	सत्य बोलने वाला	सत्यवादी
12	दूसरों पर उपकार करने वाला	उपकारी
13	जिसे कभी बुढ़ापा न आये	अजर
14	दया करने वाला	दयालु
15	जिसका आकार न हो	निराकार
16	जो आँखों के सामने हो	प्रत्यक्ष
17	जहाँ पहुँचा न जा सके	अगम, अगम्य
18	जिसे बहुत कम ज्ञान हो, थोड़ा जानने वाला	अल्पज्ञ
19	मास में एक बार आने वाला	मासिक
20	जिसके कोई संतान न हो	निस्संतान
21	जो कभी न मरे	अमर
22	जिसका आचरण अच्छा न हो	दुराचारी
23	जिसका कोई मूल्य न हो	अमूल्य
24	जो वन में घूमता हो	वनचर
25	जो इस लोक से बाहर की बात हो	अलौकिक

Cambridge Institute 9212588588

26	जो इस लोक की बात हो	लौकिक
27	जिसके नीचे रेखा हो	रेखांकित
28	जिसका संबंध पश्चिम से हो	पाश्चात्य
29	जो स्थिर रहे	स्थावर
30	दुखांत नाटक	त्रासदी
31	जो क्षमा करने के योग्य हो	क्षम्य
32	हिंसा करने वाला	हिंसक
33	हित चाहने वाला	हितैषी
34	हाथ से लिखा हुआ	हस्तलिखित
35	सब कुछ जानने वाला	सर्वज्ञ
36	जो स्वयं पैदा हुआ हो	स्वयंभू
37	जो शरण में आया हो	शरणागत
38	जिसका वर्णन न किया जा सके	वर्णनातीत
39	फल-फूल खाने वाला	शाकाहारी
40	जिसकी पत्नी मर गई हो	विधुर
41	जिसका पति मर गया हो	विधवा
42	सौतेली माँ	विमाता
43	व्याकरण जाननेवाला	वैयाकरण
44	रचना करने वाला	रचयिता
45	खून से रँगा हुआ	रक्तरंजित
46	अत्यंत सुन्दर स्त्री	रूपसी
47	कीर्तिमान पुरुष	यशस्वी
48	कम खर्च करने वाला	मितव्ययी
49	मछली की तरह आँखों वाली	मीनाक्षी
50	मयूर की तरह आँखों वाली	मयूराक्षी
51	बच्चों के लिए काम की वस्तु	बालोपयोगी

Cambridge Institute 9212588588

52	जिसकी बहुत अधिक चर्चा हो	बहुचर्चित
53	जिस स्त्री के कभी संतान न हुई हो	वंध्या (बाँझ)
54	फेन से भरा हुआ	फेनिल
55	प्रिय बोलने वाली स्त्री	प्रियंवदा
56	जिसकी उपमा न हो	निरुपम
57	जो थोड़ी देर पहले पैदा हुआ हो	नवजात
58	जिसका कोई आधार न हो	निराधार
59	नगर में वास करने वाला	नागरिक
60	रात में घूमने वाला	निशाचर
61	ईश्वर पर विश्वास न रखने वाला	नास्तिक
62	मांस न खाने वाला	निरामिष
63	बिलकुल बरबाद हो गया हो	ध्वस्त
64	जिसकी धर्म में निष्ठा हो	धर्मनिष्ठ
65	देखने योग्य	दर्शनीय
66	बहुत तेज चलने वाला	द्रुतगामी
67	जो किसी पक्ष में न हो	तटस्थ
68	तत्त्तव को जानने वाला	तत्त्तवज्ञ
69	तप करने वाला	तपस्वी
70	जो जन्म से अंधा हो	जन्मांध
71	जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो	जितेंद्रिय
72	चिंता में डूबा हुआ	चिंतित
73	जो बहुत समय कर ठहरे	चिरस्थायी
74	जिसकी चार भुजाएँ हों	चतुर्भुज
75	हाथ में चक्र धारण करनेवाला	चक्रपाणि
76	जिससे घृणा की जाए	घृणित
77	जिसे गुप्त रखा जाए	गोपनीय

Cambridge Institute 9212588588

78	गणित का ज्ञाता	गणितज्ञ
79	आकाश को चूमने वाला	गगनचुंबी
80	जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो	खंडित
818	आकाश में उड़ने वाला	नभचर
82	तेज बुद्धिवाला	कुशाग्रबुद्धि
83	कल्पना से परे हो	कल्पनातीत
84	जो उपकार मानता है	कृतज्ञ
85	किसी की हँसी उड़ाना	उपहास
86	ऊपर कहा हुआ	उपर्युक्त
87	ऊपर लिखा गया	उपरिलिखित
88	जिस पर उपकार किया गया हो	उपकृत
89	इतिहास का ज्ञाता	अतिहासज्ञ
90	आलोचना करने वाला	आलोचक
91	ईश्वर में आस्था रखने वाला	आस्तिक
92	बिना वेतन का	अवैतनिक
93	जो कहा न जा सके	अकथनीय
94	जो गिना न जा सके	अगणित
95	जिसका कोई शत्रु ही न जन्मा हो	अजातशत्रु
96	जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्‌वितीय
97	जो परिचित न हो	अपरिचित
98	जिसकी कोई उपमा न हो	अनुपम

Cambridge Institute 9212588588

कुछ सामान्य अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी	लिखायी	लिखाई	सप्ताहिक	साप्ताहिक	अलोकिक	अलौकिक
संसारिक	सांसारिक	क्यूँ	क्यों	आधीन	अधीन	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप
व्योहार	व्यवहार	बरात	बारात	उपन्यासिक	औपन्यासिक	क्षत्रीय	क्षत्रिय
दुनियां	दुनिया	तिथी	तिथि	कालीदास	कालिदास	पूरती	पूर्ति
अतिथी	अतिथि	नीती	नीति	गृहणी	गृहिणी	परिस्थित	परिस्थिति
आर्शिवाद	आशीर्वाद	निरिक्षण	निरीक्षण	बिमारी	बीमारी	पत्नि	पत्नी
शताब्दि	शताब्दी	लड़ायी	लड़ाई	स्थाई	स्थायी	श्रीमति	श्रीमती
सामिग्री	सामग्री	वापिस	वापस	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	ऊत्थान	उत्थान
दुसरा	दूसरा	साधू	साधु	रेणू	रेणु	नुपुर	नूपुर
अनुदित	अनूदित	जादु	जादू	बृज	ब्रज	प्रथक	पृथक
इतिहासिक	ऐतिहासिक	दाइत्व	दायित्व	सेनिक	सैनिक	सैना	सेना
घबड़ाना	घबराना	श्राप	शाप	बनस्पति	वनस्पति	बन	वन
विना	बिना	बसंत	वसंत	अमावश्या	अमावस्या	प्रशाद	प्रसाद
हंसिया	हँसिया	गंवार	गँवार	असोक	अशोक	निस्वार्थ	निःस्वार्थ
दुस्कर	दुष्कर	मुल्यवान	मूल्यवान	सिरीमान	श्रीमान	महाअन	महान
नवम्	नवम	क्षात्र	छात्र	छमा	क्षमा	आर्दश	आदर्श
षष्टम्	षष्ठ	प्रंतु	परंतु	प्रीक्षा	परीक्षा	मरयादा	मर्यादा
दुदर्शा	दुर्दशा	कवित्री	कवयित्री	प्रमात्मा	परमात्मा	घनिष्ट	घनिष्ठ
राजभिषेक	राज्याभिषेक	पियास	प्यास	वितीत	व्यतीत	कृप्या	कृपा
व्यक्तिक	वैयक्तिक	मांसिक	मानसिक	समवाद	संवाद	संपति	संपत्ति
विषेश	विशेष	शाशन	शासन	दुःख	दुख	मूलतयः	मूलतः
पिओ	पियो	हुये	हुए	लीये	लिए	सहास	साहस

Cambridge Institute 9212588588

रामायन	रामायण	चरन	चरण	रनभूमि	रणभूमि	रसायण	रसायन
प्रान	प्राण	मरन	मरण	कल्यान	कल्याण	पडता	पड़ता
ढ़ेर	ढेर	झाड़ू	झाड़ू	मेंढ़क	मेंढक	श्रेष्ट	श्रेष्ठ
षष्टी	षष्ठी	निष्टा	निष्ठा	सृष्ठि	सृष्टि	इष्ठ	इष्ट
स्वास्थ	स्वास्थ्य	पांडे	पांडेय	स्वतंत्रा	स्वतंत्रता	उपलक्ष	उपलक्ष्य
महत्त्त्व	महत्व	आल्हाद	आह्द	उज्वल	उज्ज्वल	व्यस्क	वयस्क

Cambridge Institute 9212588588

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

मुहावरा- कोई भी ऐसा वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे उसे मुहावरा कहते हैं।

लोकोक्ति- लोकोक्तियाँ लोक-अनुभव से बनती हैं। किसी समाज ने जो कुछ अपने लंबे अनुभव से सीखा है उसे एक वाक्य में बाँध दिया है। ऐसे वाक्यों को ही लोकोक्ति कहते हैं। इसे कहावत, जनश्रुति आदि भी कहते हैं।

मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर- मुहावरा वाक्यांश है और इसका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता। लोकोक्ति संपूर्ण वाक्य है और इसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है। जैसे-'होश उड़ जाना' मुहावरा है। 'बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी' लोकोक्ति है।

कुछ प्रचलित मुहावरे

1. अंग संबंधी मुहावरे

1. अंग छूटा- (कसम खाना) मैं अंग छूकर कहता हूँ साहब, मैने पाजेब नहीं देखी।

2. अंग-अंग मुसकाना-(बहुत प्रसन्न होना)- आज उसका अंग-अंग मुसकरा रहा था।

3. अंग-अंग टूटना-(सारे बदन में दर्द होना)-इस ज्वर ने तो मेरा अंग-अंग तोड़कर रख दिया।

4. अंग-अंग ढीला होना-(बहुत थक जाना)- तुम्हारे साथ कल चलूँगा। आज तो मेरा अंग-अंग ढीला हो रहा है।

2. अक्ल-संबंधी मुहावरे

1. अक्ल का दुश्मन-(मूर्ख)- वह तो निरा अक्ल का दुश्मन निकला।

2. अक्ल चकराना-(कुछ समझ में न आना)-प्रश्न-पत्र देखते ही मेरी अक्ल चकरा गई।

3. अक्ल के पीछे लठ लिए फिरना (समझाने पर भी न मानना)- तुम तो सदैव अक्ल के पीछे लठ लिए फिरते हो।

4. अक्ल के घोड़े दौड़ाना-(तरह-तरह के विचार करना)- बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने अक्ल के घोड़े दौड़ाए, तब कहीं वे अणुबम बना सके।

3. आँख-संबंधी मुहावरे

1. आँख दिखाना-(गुस्से से देखना)- जो हमें आँख दिखाएगा, हम उसकी आँखें फोड़ देगें।

2. आँखों में गिरना-(सम्मानरहित होना)- कुर्सी की होड़ ने जनता सरकार को जनता की आँखों में गिरा दिया।

3. आँखों में धूल झोंकना-(धोखा देना)- शिवाजी मुगल पहरेदारों की आँखों में धूल झोंककर बंदीगृह से बाहर निकल गए।

4. आँख चुराना-(छिपना)- आजकल वह मुझसे आँखें चुराता फिरता है।

5. आँख मारना-(इशारा करना)-गवाह मेरे भाई का मित्र निकला, उसने उसे आँख मारी, अन्यथा वह मेरे विरुद्ध गवाही दे देता।

6. आँख तरसना-(देखने के लालायित होना)- तुम्हें देखने के लिए तो मेरी आँखें तरस गई।

Cambridge Institute 9212588588

7. आँख फेर लेना-(प्रतिकूल होना)- उसने आजकल मेरी ओर से आँखें फेर ली हैं।

8. आँख बिछाना-(प्रतीक्षा करना)- लोकनायक जयप्रकाश नारायण जिधर जाते थे उधर ही जनता उनके लिए आँखें बिछाए खड़ी होती थी।

9. आँखें सेंकना-(सुंदर वस्तु को देखते रहना)- आँख सेंकते रहोगे या कुछ करोगे भी

10. आँखें चार होना-(प्रेम होना,आमना-सामना होना)- आँखें चार होते ही वह खिड़की पर से हट गई।

11. आँखों का तारा-(अतिप्रिय)-आशीष अपनी माँ की आँखों का तारा है।

12. आँख उठाना-(देखने का साहस करना)- अब वह कभी भी मेरे सामने आँख नहीं उठा सकेगा।

13. आँख खुलना-(होश आना)- जब संबंधियों ने उसकी सारी संपत्ति हड़प ली तब उसकी आँखें खुलीं।

14. आँख लगना-(नींद आना अथवा प्यार होना)- बड़ी मुश्किल से अब उसकी आँख लगी है। आजकल आँख लगते देर नहीं होती।

15. आँखों पर परदा पड़ना-(लोभ के कारण सचाई न दीखना)- जो दूसरों को ठगा करते हैं, उनकी आँखों पर परदा पड़ा हुआ है। इसका फल उन्हें अवश्य मिलेगा।

16. आँखों का काटा-(अप्रिय व्यक्ति)- अपनी कुप्रवृत्तियों के कारण राजन पिताजी की आँखों का काँटा बन गया।

17. आँखों में समाना-(दिल में बस जाना)- गिरधर मीरा की आँखों में समा गया।

4. कलेजा-संबंधी कुछ मुहावरे

1. कलेजे पर हाथ रखना-(अपने दिल से पूछना)- अपने कलेजे पर हाथ रखकर कहो कि क्या तुमने पैन नहीं तोड़ा।

2. कलेजा जलना-(तीव्र असंतोष होना)- उसकी बातें सुनकर मेरा कलेजा जल उठा।

3. कलेजा ठंडा होना-(संतोष हो जाना)- डाकुओं को पकड़ा हुआ देखकर गाँव वालों का कलेजा ठंढा हो गया।

4. कलेजा थामना-(जी कड़ा करना)- अपने एकमात्र युवा पुत्र की मृत्यु पर माता-पिता कलेजा थामकर रह गए।

5. कलेजे पर पत्थर रखना-(दुख में भी धीरज रखना)- उस बेचारे की क्या कहते हों, उसने तो कलेजे पर पत्थर रख लिया है।

6. कलेजे पर साँप लोटना-(ईर्ष्या से जलना)- श्रीराम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर दासी मंथरा के कलेजे पर साँप लोटने लगा।

5. कान-संबंधी कुछ मुहावरे

1. कान भरना-(चुगली करना)- अपने साथियों के विरुद्ध अध्यापक के कान भरने वाले विद्यार्थी अच्छे नहीं होते।

2. कान कतरना-(बहुत चतुर होना)- वह तो अभी से बड़े-बड़ों के कान कतरता है।

3. कान का कच्चा-(सुनते ही किसी बात पर विश्वास करना)- जो मालिक कान के कच्चे होते हैं वे भले कर्मचारियों पर भी विश्वास नहीं करते।

Cambridge Institute 9212588588

4. कान पर जूँ तक न रेंगना-(कुछ असर न होना)-माँ ने गौरव को बहुत समझाया, किन्तु उसके कान पर जूँ तक नहीं रेंगी।

5. कानोंकान खबर न होना-(बिलकुल पता न चलना)-सोने के ये बिस्कुट ले जाओ, किसी को कानोंकान खबर न हो।

6. नाक-संबंधी कुछ मुहावरे

1. नाक में दम करना-(बहुत तंग करना)-आतंकवादियों ने सरकार की नाक में दम कर रखा है।

2. नाक रखना-(मान रखना)- सच पूछो तो उसने सच कहकर मेरी नाक रख ली।

3. नाक रगड़ना-(दीनता दिखाना)-गिरहकट ने सिपाही के सामने खूब नाक रगड़ी, पर उसने उसे छोड़ा नहीं।

4. नाक पर मक्खी न बैठने देना-(अपने पर आँच न आने देना)-कितनी ही मुसीबतें उठाई, पर उसने नाक पर मक्खी न बैठने दी।

5. नाक कटना-(प्रतिष्ठा नष्ट होना)- अरे भैया आजकल की औलाद तो खानदान की नाक काटकर रख देती है।

7. मुँह-संबंधी कुछ मुहावरे

1. मुँह की खाना-(हार मानना)-पड़ोसी के घर के मामले में दखल देकर हरद्वारी को मुँह की खानी पड़ी।

2. मुँह में पानी भर आना-(दिल ललचाना)- लड्डुओं का नाम सुनते ही पंडितजी के मुँह में पानी भर आया।

3. मुँह खून लगना-(रिश्वत लेने की आदत पड़ जाना)- उसके मुँह खून लगा है, बिना लिए वह काम नहीं करेगा।

4. मुँह छिपाना-(लज्जित होना)- मुँह छिपाने से काम नहीं बनेगा, कुछ करके भी दिखाओ।

5. मुँह रखना-(मान रखना)-मैं तुम्हारा मुँह रखने के लिए ही प्रमोद के पास गया था, अन्यथा मुझे क्या आवश्यकता थी।

6. मुँहतोड़ जवाब देना-(कड़ा उत्तर देना)- श्याम मुँहतोड़ जवाब सुनकर फिर कुछ नहीं बोला।

7. मुँह पर कालिख पोतना-(कलंक लगाना)-बेटा तुम्हारे कुकर्मों ने मेरे मुँह पर कालिख पोत दी है।

8. मुँह उतरना-(उदास होना)-आज तुम्हारा मुँह क्यों उतरा हुआ है।

9. मुँह ताकना-(दूसरे पर आश्रित होना)-अब गेहूँ के लिए हमें अमेरिका का मुँह नहीं ताकना पड़ेगा।

10. मुँह बंद करना-(चुप कर देना)-आजकल रिश्वत ने बड़े-बड़े अफसरों का मुँह बंद कर रखा है।

8. दाँत-संबंधी मुहावरे

1. दाँत पीसना-(बहुत ज्यादा गुस्सा करना)- भला मुझ पर दाँत क्यों पीसते हो? शीशा तो शंकर ने तोड़ा है।

2. दाँत खट्टे करना-(बुरी तरह हराना)- भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।

Cambridge Institute 9212588588

3. दाँत काटी रोटी-(घनिष्ठता, पक्की मित्रता)- कभी राम और श्याम में दाँत काटी रोटी थी पर आज एक-दूसरे के जानी दुश्मन है।

9. गर्दन-संबंधी मुहावरे

1. गर्दन झुकाना-(लज्जित होना)- मेरा सामना होते ही उसकी गरदन झुक गई।

2. गर्दन पर सवार होना-(पीछे पड़ना)- मेरी गरदन पर सवार होने से तुम्हारा काम नहीं बनने वाला है।

3. गर्दन पर छुरी फेरना-(अत्याचार करना)-उस बेचारे की गरदन पर छुरी फेरते तुम्हें शरम नहीं आती, भगवान इसके लिए तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेंगे।

10. गले-संबंधी मुहावरे

1. गला घोंटना-(अत्याचार करना)- जो सरकार गरीबों का गला घोंटती है वह देर तक नहीं टिक सकती।

2. गला फँसाना-(बंधन में पड़ना)- दूसरों के मामले में गला फँसाने से कुछ हाथ नहीं आएगा।

3. गले मढ़ना-(जबरदस्ती किसी को कोई काम सौंपना)- इस बुद्धू को मेरे गले मढ़कर लालाजी ने तो मुझे तंग कर डाला है।

4. गले का हार-(बहुत प्यारा)- तुम तो उसके गले का हार हो, भला वह तुम्हारे काम को क्यों मना करने लगा।

11. सिर-संबंधी मुहावरे

1. सिर पर भूत सवार होना-(धुन लगाना)-तुम्हारे सिर पर तो हर समय भूत सवार रहता है।

2. सिर पर मौत खेलना-(मृत्यु समीप होना)- विभीषण ने रावण को संबोधित करते हुए कहा, 'भैया ! मुझे क्या डरा रहे हो ? तुम्हारे सिर पर तो मौत खेल रही है.

3. सिर पर खून सवार होना-(मरने-मारने को तैयार होना)- अरे, बदमाश की क्या बात करते हो ? उसके सिर पर तो हर समय खून सवार रहता है।

4. सिर-धड़ की बाजी लगाना-(प्राणों की भी परवाह न करना)- भारतीय वीर देश की रक्षा के लिए सिर-धड़ की बाजी लगा देते हैं।

5. सिर नीचा करना-(लजा जाना)-मुझे देखते ही उसने सिर नीचा कर लिया।

12. हाथ-संबंधी मुहावरे

1. हाथ खाली होना-(रुपया-पैसा न होना)- जुआ खेलने के कारण राजा नल का हाथ खाली हो गया था।

2. हाथ खींचना-(साथ न देना)-मुसीबत के समय नकली मित्र हाथ खींच लेते हैं।

3. हाथ पे हाथ धरकर बैठना-(निकम्मा होना)- उद्यमी कभी भी हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठते हैं, वे तो कुछ करके ही दिखाते हैं।

4. हाथों के तोते उड़ना-(दुख से हैरान होना)- भाई के निधन का समाचार पाते ही उसके हाथों के तोते उड़ गए।

5. हाथोंहाथ-(बहुत जल्दी)-यह काम हाथोंहाथ हो जाना चाहिए।

Cambridge Institute 9212588588

6. हाथ मलते रह जाना-(पछताना)- जो बिना सोचे-समझे काम शुरू करते है वे अंत में हाथ मलते रह जाते हैं।

7. हाथ साफ करना-(चुरा लेना)- ओह ! किसी ने मेरी जेब पर हाथ साफ कर दिया।

8. हाथ-पाँव मारना-(प्रयास करना)- हाथ-पाँव मारने वाला व्यक्ति अंत में अवश्य सफलता प्राप्त करता है।

9. हाथ डालना-(शुरू करना)- किसी भी काम में हाथ डालने से पूर्व उसके अच्छे या बुरे फल पर विचार कर लेना चाहिए।

13. हवा-संबंधी मुहावरे

1. हवा लगना-(असर पड़ना)-आजकल भारतीयों को भी पश्चिम की हवा लग चुकी है।

2. हवा से बातें करना-(बहुत तेज दौड़ना)- राणा प्रताप ने ज्यों ही लगाम हिलाई, चेतक हवा से बातें करने लगा।

3. हवाई किले बनाना-(झूठी कल्पनाएँ करना)- हवाई किले ही बनाते रहोगे या कुछ करोगे भी ?

4. हवा हो जाना-(गायब हो जाना)- देखते-ही-देखते मेरी साइकिल न जाने कहाँ हवा हो गई ?

14. पानी-संबंधी मुहावरे

1. पानी-पानी होना-(लज्जित होना)-ज्योंही सोहन ने माताजी के पर्स में हाथ डाला कि ऊपर से माताजी आ गई। बस, उन्हें देखते ही वह पानी-पानी हो गया।

2. पानी में आग लगाना-(शांति भंग कर देना)-तुमने तो सदा पानी में आग लगाने का ही काम किया है।

3. पानी फेर देना-(निराश कर देना)-उसने तो मेरी आशाओं पर पानी पेर दिया।

4. पानी भरना-(तुच्छ लगना)-तुमने तो जीवन-भर पानी ही भरा है।

15. कुछ मिले-जुले मुहावरे

1. अँगूठा दिखाना-(देने से साफ इनकार कर देना)-सेठ रामलाल ने धर्मशाला के लिए पाँच हजार रुपए दान देने को कहा था, किन्तु जब मैनेजर उनसे मांगने गया तो उन्होंने अँगूठा दिखा दिया।

2. अगर-मगर करना-(टालमटोल करना)-अगर-मगर करने से अब काम चलने वाला नहीं है। बंधु !

3. अंगारे बरसाना-(अत्यंत गुस्से से देखना)-अभिमन्यु वध की सूचना पाते ही अर्जुन के नेत्र अंगारे बरसाने लगे।

4. आड़े हाथों लेना-(अच्छी तरह काबू करना)-श्रीकृष्ण ने कंस को आड़े हाथों लिया।

5. आकाश से बातें करना-(बहुत ऊँचा होना)-टी.वी.टावर तो आकाश से बाते करती है।

6. ईद का चाँद-(बहुत कम दीखना)-मित्र आजकल तो तुम ईद का चाँद हो गए हो, कहाँ रहते हो ?

7. उँगली पर नचाना-(वश में करना)-आजकल की औरतें अपने पतियों को उँगलियों पर नचाती हैं।

8. कलई खुलना-(रहस्य प्रकट हो जाना)-उसने तो तुम्हारी कलई खोलकर रख दी।

9. काम तमाम करना-(मार देना)- रानी लक्ष्मीबाई ने पीछा करने वाले दोनों अंग्रेजों का काम तमाम कर दिया।

Cambridge Institute 9212588588

10. कुत्ते की मौत करना-(बुरी तरह से मरना)-राष्ट्रद्रोही सदा कुत्ते की मौत मरते हैं।

11. कोल्हू का बैल-(निरंतर काम में लगे रहना)-कोल्हू का बैल बनकर भी लोग आज भरपेट भोजन नहीं पा सकते।

12. खाक छानना-(दर-दर भटकना)-खाक छानने से तो अच्छा है एक जगह जमकर काम करो।

13. गड़े मुरदे उखाड़ना-(पिछली बातों को याद करना)-गड़े मुरदे उखाड़ने से तो अच्छा है कि अब हम चुप हो जाएँ।

14. गुलछर्रे उड़ाना-(मौज करना)-आजकल तुम तो दूसरे के माल पर गुलछर्रे उड़ा रहे हो।

15. घास खोदना-(फुजूल समय बिताना)-सारी उम्र तुमने घास ही खोदी है।

16. चंपत होना-(भाग जाना)-चोर पुलिस को देखते ही चंपत हो गए।

17. चौकड़ी भरना-(छलाँगे लगाना)-हिरन चौकड़ी भरते हुए कहीं से कहीं जा पहुँचे।

18. छक्के छुड़ाना-(बुरी तरह पराजित करना)-पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी के छक्के छुड़ा दिए।

19. टका-सा जवाब देना-(कोरा उत्तर देना)-आशा थी कि कहीं वह मेरी जीविका का प्रबंध कर देगा, पर उसने तो देखते ही टका-सा जवाब दे दिया।

20. टोपी उछालना-(अपमानित करना)-मेरी टोपी उछालने से उसे क्या मिलेगा?

21. तलवे चाटने-(खुशामद करना)-तलवे चाटकर नौकरी करने से तो कहीं डूब मरना अच्छा है।

22. थाली का बैंगन-(अस्थिर विचार वाला)- जो लोग थाली के बैगन होते हैं, वे किसी के सच्चे मित्र नहीं होते।

23. दाने-दाने को तरसना-(अत्यंत गरीब होना)-बचपन में मैं दाने-दाने को तरसता फिरा, आज ईश्वर की कृपा है।

24. दौड़-धूप करना-(कठोर श्रम करना)-आज के युग में दौड़-धूप करने से ही कुछ काम बन पाता है।

25. धज्जियाँ उड़ाना-(नष्ट-भ्रष्ट करना)-यदि कोई भी राष्ट्र हमारी स्वतंत्रता को हड़पना चाहेगा तो हम उसकी धज्जियाँ उड़ा देंगे।

26. नमक-मिर्च लगाना-(बढ़ा-चढ़ाकर कहना)-आजकल समाचारपत्र किसी भी बात को इस प्रकार नमक-मिर्च लगाकर लिखते हैं कि जनसाधारण उस पर विश्वास करने लग जाता है।

27. नौ-दो ग्यारह होना-(भाग जाना)- बिल्ली को देखते ही चूहे नौ-दो ग्यारह हो गए। 28. फूँक-फूँककर कदम रखना-(सोच-समझकर कदम बढ़ाना)-जवानी में फूँक-फूँककर कदम रखना चाहिए।

29. बाल-बाल बचना-(बड़ी कठिनाई से बचना)-गाड़ी की टक्कर होने पर मेरा मित्र बाल-बाल बच गया।

30. भाड़ झोंकना-(योंही समय बिताना)-दिल्ली में आकर भी तुमने तीस साल तक भाड़ ही झोंका है।

Cambridge Institute 9212588588

31. मक्खियाँ मारना-(निकम्मे रहकर समय बिताना)-यह समय मक्खियाँ मारने का नहीं है, घर का कुछ काम-काज ही कर लो।

32. माथा ठनकना-(संदेह होना)- सिंह के पंजों के निशान रेत पर देखते ही गीदड़ का माथा ठनक गया।

33. मिट्टी खराब करना-(बुरा हाल करना)-आजकल के नौजवानों ने बूढ़ों की मिट्टी खराब कर रखी है।

34. रंग उड़ाना-(घबरा जाना)-काले नाग को देखते ही मेरा रंग उड़ गया।

35. रफूचक्कर होना-(भाग जाना)-पुलिस को देखते ही बदमाश रफूचक्कर हो गए।

36. लोहे के चने चबाना-(बहुत कठिनाई से सामना करना)- मुगल सम्राट अकबर को राणाप्रताप के साथ टक्कर लेते समय लोहे के चने चबाने पड़े।

37. विष उगलना-(बुरा-भला कहना)-दुर्योधन को गांडीव धनुष का अपमान करते देख अर्जुन विष उगलने लगा।

38. श्रीगणेश करना-(शुरू करना)-आज बृहस्पतिवार है, नए वर्ष की पढाई का श्रीगणेश कर लो।

39. हजामत बनाना-(ठगना)-ये हिप्पी न जाने कितने भारतीयों की हजामत बना चुके हैं।

40. शैतान के कान कतरना-(बहुत चालाक होना)-तुम तो शैतान के भी कान कतरने वाले हो, बेचारे रामनाथ की तुम्हारे सामने बिसात ही क्या है ?

41. राई का पहाड़ बनाना-(छोटी-सी बात को बहुत बढ़ा देना)- तनिक-सी बात के लिए तुमने राई का पहाड़ बना दिया।

कुछ प्रचलित लोकोक्तियाँ

1. अधजल गगरी छलकत जाए-(कम गुण वाला व्यक्ति दिखावा बहुत करता है)- श्याम बातें तो ऐसी करता है जैसे हर विषय में मास्टर हो, वास्तव में उसे किसी विषय का भी पूरा ज्ञान नहीं-अधजल गगरी छलकत जाए।

2. अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत-(समय निकल जाने पर पछताने से क्या लाभ)-सारा साल तुमने पुस्तकें खोलकर नहीं देखीं। अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।

3. आम के आम गुठलियों के दाम-(दुगुना लाभ)-हिन्दी पढ़ने से एक तो आप नई भाषा सीखकर नौकरी पर पदोन्नति कर सकते हैं, दूसरे हिन्दी के उच्च साहित्य का रसास्वादन कर सकते हैं, इसे कहते हैं-आम के आम गुठलियों के दाम।

4. ऊँची दुकान फीका पकवान-(केवल ऊपरी दिखावा करना)- कनॉटप्लेस के अनेक स्टोर बड़े प्रसिद्ध है, पर सब घटिया दर्जे का माल बेचते हैं। सच है, ऊँची दुकान फीका पकवान।

5. घर का भेदी लंका ढाए-(आपसी फूट के कारण भेद खोलना)-कई व्यक्ति पहले कांग्रेस में थे, अब जनता (एस) पार्टी में मिलकर काग्रेंस की बुराई करते हैं। सच है, घर का भेदी लंका ढाए।

6. जिसकी लाठी उसकी भैंस-(शक्तिशाली की विजय होती है)- अंग्रेजों ने सेना के बल पर बंगाल पर अधिकार कर लिया था-जिसकी लाठी उसकी भैंस।

7. जल में रहकर मगर से वैर-(किसी के आश्रय में रहकर उससे शत्रुता मोल लेना)- जो भारत में रहकर

Cambridge Institute 9212588588

विदेशों का गुणगान करते हैं, उनके लिए वही कहावत है कि जल में रहकर मगर से वैर।

8. थोथा चना बाजे घना-(जिसमें सत नहीं होता वह दिखावा करता है)- गजेंद्र ने अभी दसवीं की परीक्षा पास की है, और आलोचना अपने बड़े-बड़े गुरुजनों की करता है। थोथा चना बाजे घना।

9. दूध का दूध पानी का पानी-(सच और झूठ का ठीक फैसला)- सरपंच ने दूध का दूध,पानी का पानी कर दिखाया, असली दोषी मंगू को ही दंड मिला।

10. दूर के ढोल सुहावने-(जो चीजें दूर से अच्छी लगती हों)- उनके मसूरी वाले बंगले की बहुत प्रशंसा सुनते थे किन्तु वहाँ दुर्गंध के मारे तंग आकर हमारे मुख से निकल ही गया-दूर के ढोल सुहावने।

11. न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी-(कारण के नष्ट होने पर कार्य न होना)- सारा दिन लड़के आमों के लिए पत्थर मारते रहते थे। हमने आँगन में से आम का वृक्ष की कटवा दिया। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।

12. नाच न जाने आँगन टेढ़ा-(काम करना नहीं आना और बहाने बनाना)-जब रवींद्र ने कहा कि कोई गीत सुनाइए, तो सुनील बोला, 'आज समय नहीं है' । फिर किसी दिन कहा तो कहने लगा, 'आज मूड नहीं है' । सच है, नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

13. बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख-(माँगे बिना अच्छी वस्तु की प्राप्ति हो जाती है, माँगने पर साधारण भी नहीं मिलती)- अध्यापकों ने माँगों के लिए हड़ताल कर दी, पर उन्हें क्या मिला ? इनसे तो बैक कर्मचारी अच्छे रहे, उनका भत्ता बढ़ा दिया गया। बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।

14. मान न मान मैं तेरा मेहमान-(जबरदस्ती किसी का मेहमान बनना)-एक अमेरिकन कहने लगा, मैं एक मास आपके पास रहकर आपके रहन-सहन का अध्ययन करूँगा। मैंने मन में कहा, अजब आदमी है, मान न मान मैं तेरा मेहमान।

15. मन चंगा तो कठौती में गंगा-(यदि मन पवित्र है तो घर ही तीर्थ है)-भैया रामेश्वरम जाकर क्या करोगे ? घर पर ही ईशस्तुति करो। मन चंगा तो कठौती में गंगा।

16. दोनों हाथों में लड्डू-(दोनों ओर लाभ)- महेंद्र को इधर उच्च पद मिल रहा था और उधर अमेरिका से वजीफा उसके तो दोनों हाथों में लड्डू थे।

17. नया नौ दिन पुराना सौ दिन-(नई वस्तुओं का विश्वास नहीं होता, पुरानी वस्तु टिकाऊ होती है)- अब भारतीय जनता का यह विश्वास है कि इस सरकार से तो पहली सरकार फिर भी अच्छी थी। नया नौ दिन, पुराना नौ दिन।

18. बगल में छुरी मुँह में राम-राम-(भीतर से शत्रुता और ऊपर से मीठी बातें)- साम्राज्यवादी आज भी कुछ राष्ट्रों को उन्नति की आशा दिलाकर उन्हें अपने अधीन रखना चाहते हैं, परन्तु अब सभी देश समझ गए हैं कि उनकी बगल में छुरी और मुँह में राम-राम है।

19. लातों के भूत बातों से नहीं मानते-(शरारती समझाने से वश में नहीं आते)- सलीम बड़ा शरारती है, पर उसके अब्बा उसे प्यार से समझाना चाहते हैं। किन्तु वे नहीं जानते कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते।

20. सहज पके जो मीठा होय-(धीरे-धीरे किए जाने वाला कार्य स्थायी फलदायक होता है)- विनोबा भावे

Cambridge Institute 9212588588

का विचार था कि भूमि सुधार धीरे-धीरे और शांतिपूर्वक लाना चाहिए क्योंकि सहज पके सो मीठा होय।

21. साँप मरे लाठी न टूटे-(हानि भी न हो और काम भी बन जाए)- घनश्याम को उसकी दुष्टता का ऐसा मजा चखाओ कि बदनामी भी न हो और उसे दंड भी मिल जाए। बस यही समझो कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

22. अंत भला सो भला-(जिसका परिणाम अच्छा है, वह सर्वोत्तम है)- श्याम पढ़ने में कमजोर था, लेकिन परीक्षा का समय आते-आते पूरी तैयारी कर ली और परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसी को कहते हैं अंत भला सो भला।

23. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए-(बहुत कंजूस होना)-महेंद्रपाल अपने बेटे को अच्छे कपड़े तक भी सिलवाकर नहीं देता। उसका तो यही सिद्धान्त है कि चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।

24. सौ सुनार की एक लुहार की-(निर्बल की सैकड़ों चोटों की सबल एक ही चोट से मुकाबला कर देते है)- कौरवों ने भीम को बहुत तंग किया तो वह कौरवों को गदा से पीटने लगा-सौ सुनार की एक लुहार की।

25. सावन हरे न भादों सूखे-(सदैव एक-सी स्थिति में रहना)- गत चार वर्षों में हमारे वेतन व भत्ते में एक सौ रुपए की बढ़ोत्तरी हुई है। उधर 25 प्रतिशत दाम बढ़ गए हैं-भैया हमारी तो यही स्थिति रही है कि सावन हरे न भादों सूखे।

Cambridge Institute 9212588588

लिंग :-

"संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु की जाति (स्त्री या पुरूष) के भेद का बोध होता हो, उसे लिंग कहते है।"

हिन्दी व्याकरण में लिंग के दो भेद होते है –

1.पुलिंग

2.स्त्रीलिंग

1.पुलिंग :- जिस संज्ञा शब्द से पुरूष जाति का बोध होता है,उसे पुलिंग कहते है। जैसे -पिता ,राजा,घोड़ा ,कुत्ता,बन्दर ,हंस ,बकरा ,लड़का आदि।

2.स्त्रीलिंग :- जिस संज्ञा शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते है। जैसे - माता,रानी,घोड़ी,कुतिया,बंदरिया ,हंसिनी,लड़की,बकरी आदि।

प्राणीवाचक संज्ञाओ का लिंग निर्णय आसान है,परन्तु अप्राणीवाचक (वस्तु) संज्ञाओ के लिंग निर्णय में परेशानी होती है, क्योंकि हिन्दी व्याकरण में निर्जीव वस्तुओं को भी पुरूष या स्त्री लिंगो में बाटा जाता है। प्रायः प्रयोग या आवश्यकता के आधार पर लिंग की पहचान हो जाती है,फिरभी कुछ ऐसे प्राणीवाचक शब्द होते है,जिन्हें हमेशा स्त्रीलिंग तथा पुलिंग में ही प्रयोग किया जाता है। कुछ संज्ञा शब्द इन नियमों के अपवाद भी होते है।

A. कुछ प्राणीवाचक शब्द हमेशा पुलिंग या स्त्रीलिंग में ही प्रयुक्त होते है।

(अ) पुलिंग - कौवा ,खटमल,गीदड़ ,मच्छर ,चीता,चीन,उल्लू आदि।

(ब) स्त्रीलिंग - सवारी ,गुडिया ,गंगा ,यमुना ।

B. पर्वतों के नाम पुलिंग होते है। जैसे -हिमालय ,विन्द्याचल ,सतपुडा आदि।

C. देशों के नाम हमेशा पुलिंग होते है। जैसे -भारत ,चीन ,इरान ,अमेरिका आदि।

D. महीनो के नाम हमेशा पुलिंग होते है । जैसे - चैत,वैसाख ,जनवरी ,फरवरी आदि।

E. दिनों के नाम हमेशा पुलिंग होते है । जैसे - सोमवार,बुधवार ,शनिवार आदि।

F. नक्षत्र -ग्रहों के नाम पुलिंग होते है । जैसे - सूर्य,चन्द्र ,राहू ,शनि आदि।

G. नदियों के नाम हमेशा स्त्रीलिंग होते है। जैसे - गंगा ,जमुना ,कावेरी आदि।

H. भाषा-बोलियों के नाम हमेशा स्त्रीलिंग होते है। जैसे -हिन्दी ,उर्दू ,पंजाबी,अरबी,अवधी,पहाडी आदि।

I."अ' से अंत होने वाले शब्द पुलिंग होते है तथा "ई' ,आई ,इन ,इया आदि से समाप्त होने वाले शब्द स्त्रीलिंग होते है। जैसे :- फल ,फूल,चित्र ,चीन आदि पुलिंग शब्द है । लकड़ी ,कहानी ,नारी,लेखनी,गुडिया ,खटिया आदि स्त्रीलिंग शब्द है।

J.धातुओं ,अनाज ,द्रव्य ,पदार्थ तथा शरीर के अंगो के नाम पुलिंग होते है। जैसे -सोना,तांबा ,पानी,तेल,दूध, आदि।

Cambridge Institute 9212588588

K.कुछ संज्ञा शब्दों में मादा या नर लगाकर लिंग का प्रयोग किया जाता है।

भेडिया -मादा भेडिया

नर खरगोश -मादा खरगोश

नर छिपकली - मादा छिपकली

नोट - जिस संज्ञा शब्द का लिंग ज्ञात करना हो ,उसे पहले बहुवचन में बदल लिजिए। बहुवचन में बदल लेने पर यदि शब्द के अंत में "एँ" या "आँ" आता है,तो वह शब्द स्त्रीलिंग है, यदि एँ या आँ नही आता ,तो वह शब्द पुलिंग है ।

उदाहरण:-

पंखा --पंखे --आँ या एँ नही आया---पुलिंग

चाबी --चाबियाँ-- आँ आया है ---स्त्रीलिंग

Cambridge Institute 9212588588

वचन

शब्द के जिस रुप से व्यक्ति या वस्तु के एक या अनेक होने का ज्ञान हो, उसे वचन कहते है ।

वचन के भेद

एकवचन – शब्द के जिस रुप से एक ही वस्तु का ज्ञान हो, उसे एकवचन कहते है ।

जैसे – लडका, घोड़ा, पुस्तक आदि ।

बहुवचन – शब्द के जिस रुप से एक से अधिक वस्तुओं का ज्ञान हो, उसे बहुवचन कहते है ।

जैसे – लड़के, घोड़े, पुस्तके आदि ।

बहुवचन बनाने के नियम

1. अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के अन्तिम 'अ' को 'एँ' कर देते है ।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आँख	आँखे	पुस्तक	पुस्तकें
बात	बातें	गाय	गायें
रात	रातें	भैस	भैसें

2. आकारान्त पुल्लिंग शब्दों मे 'आ' को 'ए' कर देते है -

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
घोड़ा	घोड़े	बेटा	बेटे
गधा	गधे	कुत्ता	कुत्ते
लड़का	लड़कें	मुर्गा	मुर्गें
कपड़ा	कपड़े	पहिया	पहियें

Cambridge Institute 9212588588

अपवाद – सम्बन्धवाचक और संस्कृत के कुछ आकारान्त शब्दो का रुप नही बदलता ।

जैसे – चाचा	चाचा	पिता	पिता
नाना	नाना	यौद्धा	यौद्धा

3. आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के आगे 'ए' लगा देते है –

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
माता	माताएँ	महिला	महिलाएँ
माला	मालाएँ	गाथा	गाथाएँ
कन्या	कन्याएँ	सभा	सभाएँ
पाठशाला	पाठशालाएँ	शिला	शिलाएँ
लता	लताएँ	अध्यापिका	अध्यापिकाएँ

इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों मे 'याँ' लगाकर ईकारान्त की ई को ह्रस्व इ में बदल देते है

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
जाति	जातियाँ	विधि	विधियाँ
तिथि	तिथियाँ	नारी	नारियाँ
रीति	रीतियाँ	नदी	नदियाँ
लड़्की	लड़कियाँ	कटोरी	कटोरियाँ
कहानी	कहानियाँ	थाली	थालियाँ

Cambridge Institute 9212588588

रानी	रानियाँ	स्त्री	स्त्रियाँ

'या' अन्त वाले स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'याँ' हो जाता है ।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
चिड़िया	चिड़ियाँ	गुड़िया	गुड़ियाँ
लुटिया	लुटियाँ	डिबिया	डिबियाँ
चुहिया	चुहियाँ	कुतिया	कुतियाँ
खटिया	खटियाँ	बिछिया	बिछियाँ

कुछ शब्दो में 'उ' ,'ऊ' , तथा 'औ' के साथ बहुवचन बनाते समय 'एँ' जोड़ देते है और दीर्घ 'ऊ' को ह्रस्व 'उ' में बदल देते है –

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
वस्तु	वस्तुएँ	बहू	बहुएँ
धेनू	धेनुएँ	वधू	वधुएँ
गौ	गौएँ		

कुछ शब्दों में दल, वृन्द, गण, जन, लोग आदि शब्द जोड़कर भी उसके बहुवचन रुप बनाए जाते है -

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गुरु	गुरुजन	आप	आपलोग
विद्यार्थी	विद्यार्थीगण	अध्यापक	अध्यापकगण

Cambridge Institute 9212588588

मित्र	मित्रवर्ग	हम	हम लोग
अमीर	अमीर लोग	सेना	सेना दल
गरीब	गरीब लोग	टिड्डी	टिड्डी दल
शिक्षक	शिक्षक वर्ग	दुश्मन	दुश्मन लोग

कुछ शब्दों के एकवचन और बहुवचन दोनों में समान रुप रहते है –

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
जल	जल	भाई	भाई
फल	फल	बाजार	बाजार
बालक	बालक	मुनि	मुनि
कवि	कवि	ऋषि	ऋषि
वारि	वारि	प्रेम	प्रेम
हाथी	हाथी	क्रोध	क्रोध

विशेष – कई शब्द एक वचन और बहुवचन में समान होते है, परन्तु कारक चिन्ह (ने, में, को, आदि) पीछे लगाने से बहुवचन बनाते समय उन शब्दों के पीछे 'ओ' जोंड़ देते है

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बालक ने	बालकों ने	ऋषि को	ऋषियों को
घर में	घरों में	हिन्दु ने	हिन्दुओं ने
चोर से	चोंरो से	साधु के लिए	साधुओं के लिए

Cambridge Institute 9212588588

विपरीतार्थक (विलोम शब्द)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अथ	इति	आविर्भाव	तिरोभाव	आकर्षण	विकर्षण
आमिष	निरामिष	अभिज्ञ	अनभिज्ञ	आजादी	गुलामी
अनुकूल	प्रतिकूल	आर्द्र	शुष्क	अनुराग	विराग
आहार	निराहार	अल्प	अधिक	अनिवार्य	वैकल्पिक
अमृत	विष	अगम	सुगम	अभिमान	नम्रता
आकाश	पाताल	आशा	निराशा	अर्थ	अनर्थ
अल्पायु	दीर्घायु	अनुग्रह	विग्रह	अपमान	सम्मान
आश्रित	निराश्रित	अंधकार	प्रकाश	अनुज	अग्रज
अरुचि	रुचि	आदि	अंत	आदान	प्रदान
आरंभ	अंत	आय	व्यय	अर्वाचीन	प्राचीन
अवनति	उन्नति	कटु	मधुर	अवनी	अंबर
क्रिया	प्रतिक्रिया	कृतज्ञ	कृतघ्न	आदर	अनादर

Cambridge Institute 9212588588

कड़वा	मीठा	आलोक	अंधकार	क्रुद्ध	शान्त
उदय	अस्त	क्रय	विक्रय	आयात	निर्यात
कर्म	निष्कर्म	अनुपस्थित	उपस्थित	खिलना	मुरझाना
आलस्य	स्फूर्ति	खुशी	दुख, गम	आर्य	अनार्य
गहरा	उथला	अतिवृष्टि	अनावृष्टि	गुरु	लघु
आदि	अनादि	जीवन	मरण	इच्छा	अनिच्छा
गुण	दोष	इष्ट	अनिष्ट	गरीब	अमीर
इच्छित	अनिच्छित	घर	बाहर	इहलोक	परलोक
चर	अचर	उपकार	अपकार	छूत	अछूत
उदार	अनुदार	जल	थल	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
जड़	चेतन	उधार	नकद	जीवन	मरण
उत्थान	पतन	जंगम	स्थावर	उत्कर्ष	अपकर्ष
उत्तर	दक्षिण	जटिल	सरस	गुप्त	प्रकट
एक	अनेक	तुच्छ	महान	ऐसा	वैसा

Cambridge Institute 9212588588

दिन	रात	देव	दानव	दुराचारी	सदाचारी
मानवता	दानवता	धर्म	अधर्म	महात्मा	दुरात्मा
धीर	अधीर	मान	अपमान	धूप	छाँव
मित्र	शत्रु	नूतन	पुरातन	मधुर	कटु
नकली	असली	मिथ्या	सत्य	निर्माण	विनाश
मौखिक	लिखित	आस्तिक	नास्तिक	मोक्ष	बंधन
निकट	दूर	रक्षक	भक्षक	निंदा	स्तुति
पतिव्रता	कुलटा	राजा	रंक	पाप	पुण्य
राग	द्वेष	प्रलय	सृष्टि	रात्रि	दिवस
पवित्र	अपवित्र	लाभ	हानि	विधवा	सधवा
प्रेम	घृणा	विजय	पराजय	प्रश्न	उत्तर
पूर्ण	अपूर्ण	वसंत	पतझर	परतंत्र	स्वतंत्र
विरोध	समर्थन	बाढ़	सूखा	शूर	कायर
बंधन	मुक्ति	शयन	जागरण	बुराई	भलाई

Cambridge Institute 9212588588

शीत	उष्ण	भाव	अभाव	स्वर्ग	नरक
मंगल	अमंगल	सौभाग्य	दुर्भाग्य	स्वीकृत	अस्वीकृत
शुक्ल	कृष्ण	हित	अहित	साक्षर	निरक्षर
स्वदेश	विदेश	हर्ष	शोक	हिंसा	अहिंसा
स्वाधीन	पराधीन	क्षणिक	शाश्वत	साधु	असाधु
ज्ञान	अज्ञान	सुजन	दुर्जन	शुभ	अशुभ
सुपुत्र	कुपुत्र	सुमति	कुमति	सरस	नीरस
सच	झूठ	साकार	निराकार	श्रम	विश्राम
स्तुति	निंदा	विशुद्ध	दूषित	सजीव	निर्जीव
विषम	सम	सुर	असुर	विद्वान	मूर्ख

Cambridge Institute 9212588588